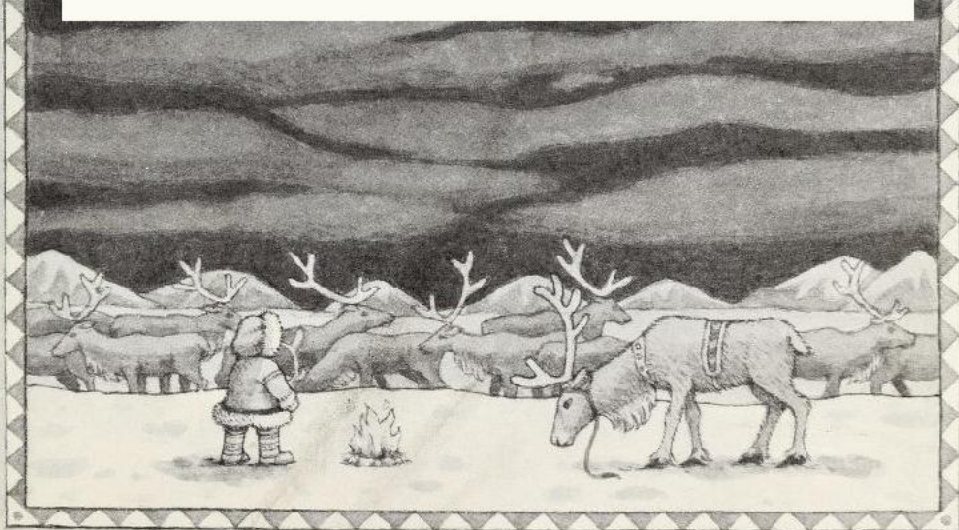


# लड़की और चंद्रमा वाला आदमी



जीनेट, हिंदी : विदूषक

उत्तर के बेहद ठण्डे इलाके में एक लड़की रहती थी.  
वो अपने पिता के साथ बिल्कुल अकेली रहती थी. वो  
अपने बारहसिंघों के झुंड की देखभाल करती थी. गर्मियों  
में वो बारहसिंघों को चराने के लिए दूर ले जाती थी. जब  
सर्दी आती तो लड़की अपने घर से बहुत दूर होती थी.

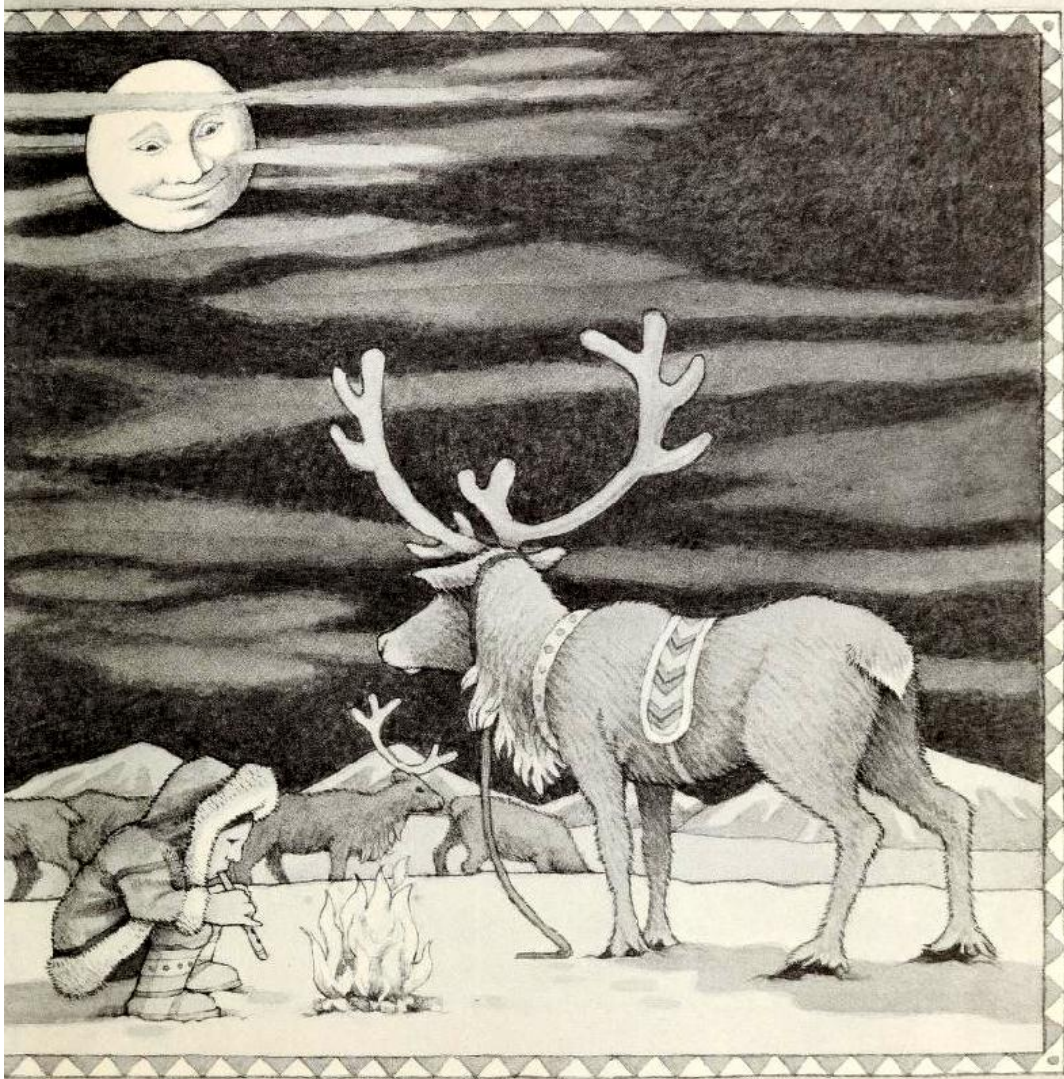


रात के समय जब बारहसिंघों का झुंड शांत होता तो लड़की बांसुरी बजाती. उत्तर में सर्दी की ठंडी रातें अक्सर बहुत अकेली होती हैं. बूढ़ा-बारहसिंघा जो उसकी बर्फ-गाड़ी (स्लेज) खींचता था उसे चुपचाप बांसुरी बजाते हुए देखता था.

एक दिन जब लड़की बहुत देर तक बांसुरी बजाती रही तो बूढ़े-बारहसिंघे ने एक अजीब चीज़ देखी. आसमान में चन्द्रमा, धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था.







जैसे-जैसे लड़की बांसुरी बजाती रही, चाँद बढ़ा, और बढ़ा होता गया. तब बूढ़े-बारहसिंघे को असली बात समझ में आई. चन्द्रमा आसमान से अपनी स्लेज में बैठकर नीचे उतर रहा था!

“ज़रा ऊपर देखो! ज़रा ऊपर देखो!” बूढ़ा बारहसिंघा चिल्लाया. “चाँद वाला आदमी तुम्हें ले जाने के लिए आ रहा है.”

“लड़की ने अपनी बांसुरी ज़मीन पर फेंक दी और फिर वो रोने लगी, “अब मैं क्या करूँ?”

तुरंत बूढ़े-बारहसिंघे ने स्नो में एक गड्ढा खोदा और जल्दी से उसमें लड़की को छुपा दिया. अब स्नो में से सिर्फ लड़की के सिर का सफ़ेद हुड ही दिख रहा था.





तभी चाँद वाला आदमी वहां पहुंचा. वो अपने स्लेज से बाहर कूदा.

“छोटी लड़की! छोटी लड़की!” उसने कहा, “मुझे तुम्हारी बांसुरी तो दिख रही है, पर तुम कहाँ हो?” चाँद वाले आदमी ने छोटी लड़की को सब जगह ढूँढा पर वो उसे कहीं नहीं मिली.



“मुझे तुम कहीं नहीं दिख रही हो,” चाँद वाले आदमी ने कहा, “मैं वापिस आऊँगा. फिर मैं तुम्हें आसमान में अपने साथ ले जाऊँगा.” उसके बाद चाँद वाला आदमी अपनी स्लेज में वापिस बैठा और रात के अँधेरे में ओझल हो गया.







चाँद वाले आदमी के जाने के बाद बूढ़े-बारहसिंघे ने छोटी लड़की को स्नो में से बाहर निकाला और कहा, “चलो जल्दी करो! जल्दी से मुझे स्लेज से बांधो. उस आदमी के दुबारा वापिस आने से पहले हम तुम्हारे पिताजी के कैंप में जायेंगे.” लड़की के स्लेज में बैठते ही बूढ़े-बारहसिंघे ने उसे तेज़ी से खींचा. स्लेज, बर्फ और स्नो पर तेज़ी से दौड़ी. जल्द ही वो छोटी लड़की के पिता के कैंप में पहुँचे.



तुरंत लड़की अपने पिताजी के तम्बू में गई पर वो वहां नहीं थे. “अरे नहीं!” लड़की ने कहा. “अब जब मेरे पिताजी नहीं हैं, फिर भला मेरी कौन मदद करेगा?”

“मैं तुम्हारी मदद करूंगा,” बूढ़े-बारहसिंघे ने कहा. “पर पहले मैं तुम्हें किसी अन्य रूप में बदलूंगा जिससे कि चाँद वाला आदमी तुम्हें पहचान नहीं पाए. मैं तुम्हें एक पत्थर की ओखली में बदल सकता हूँ जिसे ठण्डे मीट और हड्डियों को, पीसने के काम में लाया जाता है.”

“नहीं,” लड़की ने कहा. “वो मुझे पहचान जाएगा.”

“या फिर मैं तुम्हें एक हथौड़े में बदल सकता हूँ,” बूढ़े बारहसिंघे ने कहा.

“नहीं, उस रूप में भी वो मुझे पहचान लेगा.”

“मैं तुम्हें एक खम्बे में बदल सकता हूँ.”

“वो मुझे खम्बे में भी पहचान लेगा.”

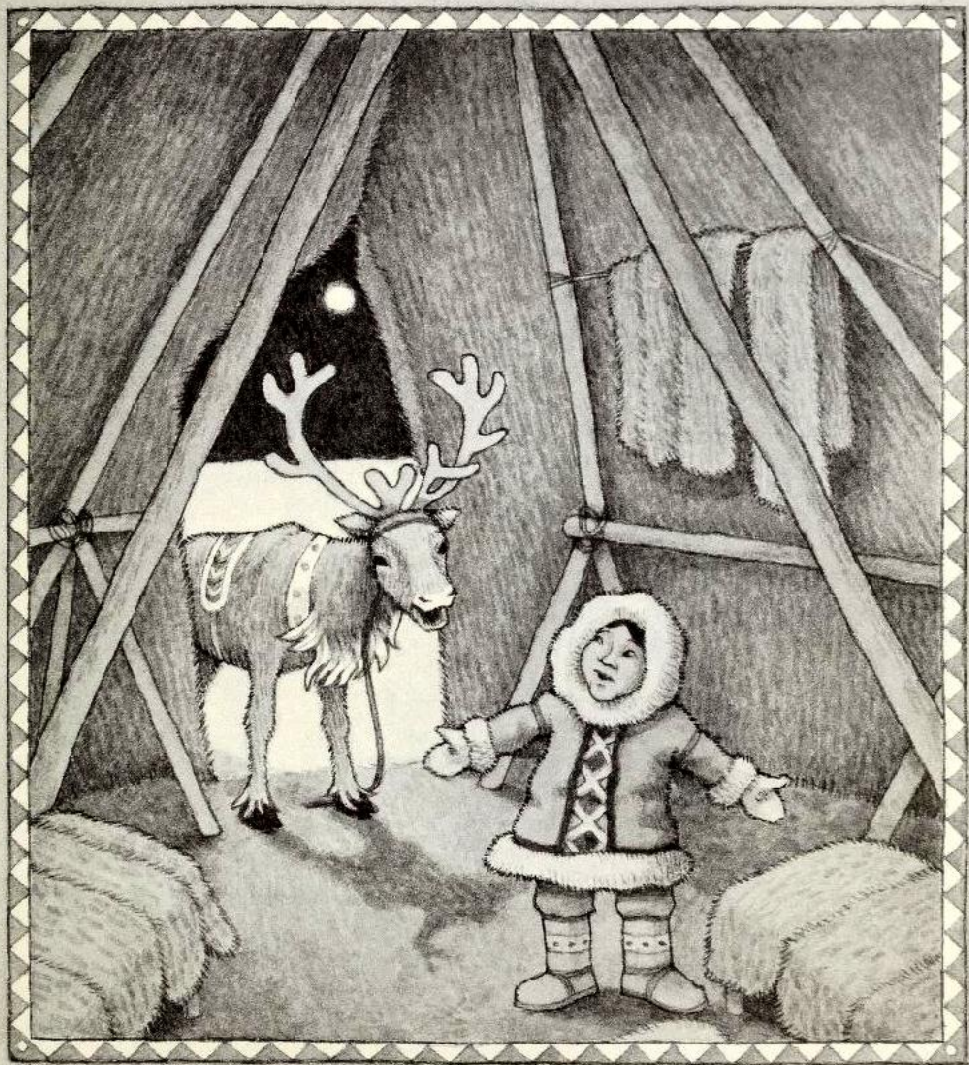
“ठीक है,” बूढ़े बारहसिंघे ने कहा, “फिर मैं तुम्हें तुम्हें ऊनी कम्बल के एक बाल में बदल सकता हूँ.”

“नहीं वो भी ठीक नहीं होगा,” छोटी लड़की ने कहा.

“लैंप! हाँ मैं तुम्हें एक दीपक (लैंप) में बदल सकता हूँ.”

“बहुत बढ़िया!” लड़की ने कहा. “फिर वो मुझे कभी नहीं पहचान पायेगा.”







उसके बाद बूढ़े बारहसिंघे ने अपने खुर से ज़मीन को तीन बार ठोका. उससे लड़की एक लैंप में बदल गई.

उसी क्षण चाँद वाला आदमी तम्बू में दौड़ता हुआ घुसा.

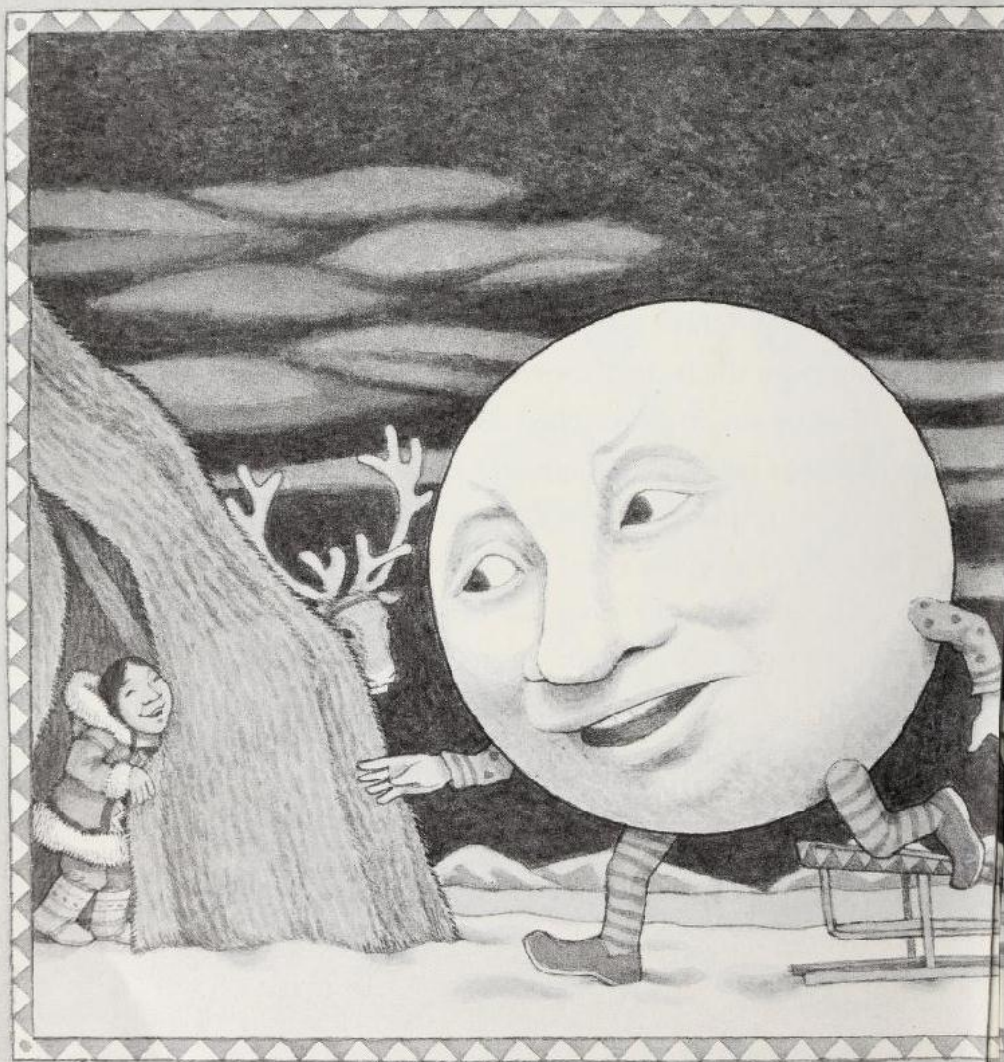
“छोटी लड़की! छोटी लड़की! तुम कहाँ हो?” उसने कहा और फिर उसने पलंग पर से कम्बल उठाया. “मुझे पता है कि तुम यहीं-कहीं छिपी हो.”

चाँद वाले आदमी ने सब तरफ खोजा. उसने तम्बू के खम्बों का मुआईना किया. उसने कम्बल के हर बाल का बारीकी से निरीक्षण किया. उसने ज़मीन का चप्पा-चप्पा छान मारा. पर छोटी लड़की उसे कहीं नहीं मिली.

पूरे समय लैंप अपनी सम्पूर्ण तेज़ी के साथ जलता रहा और आसपास की चीज़ें रोशन करता रहा. लैंप बहुत गर्म था शायद इसलिए चाँद वाले आदमी की उसे छूने की हिम्मत नहीं हुई.

“बड़ी अजीब बात है!” उसने कहा. “मुझे पक्की तौर पर पता कि छोटी लड़की यहीं कहीं है. पर अब मुझे आसमान में वापिस लौटना होगा. मैं कल रात फिर वापिस आऊँगा.”

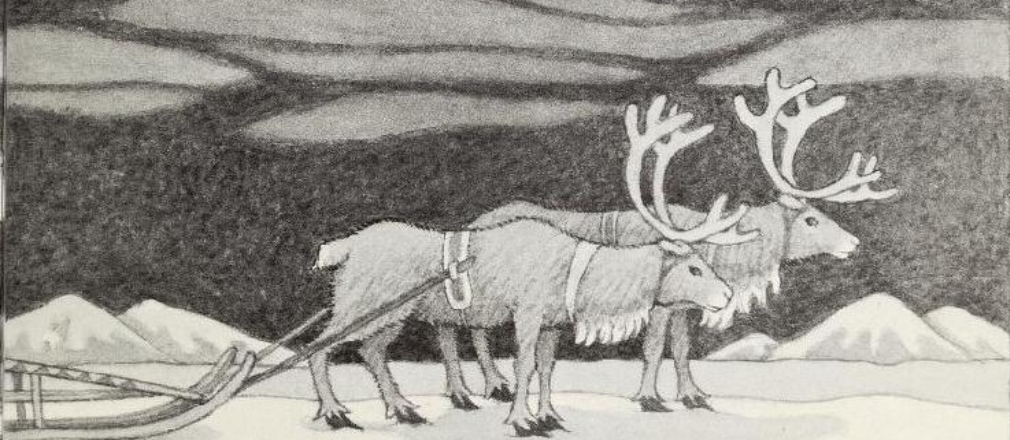




चाँद वाला आदमी अपने स्लेज में बैठ ही रहा था जब उसे पीछे से किसी के हंसने की आवाज़ सुनाई दी. जब वो मुड़ा तो उसे तम्बू के दरवाज़े पर वो छोटी लड़की खड़ी हुई दिखी.

“मैं यहाँ हूँ! मैं यहाँ हूँ! वो चिल्लाई.

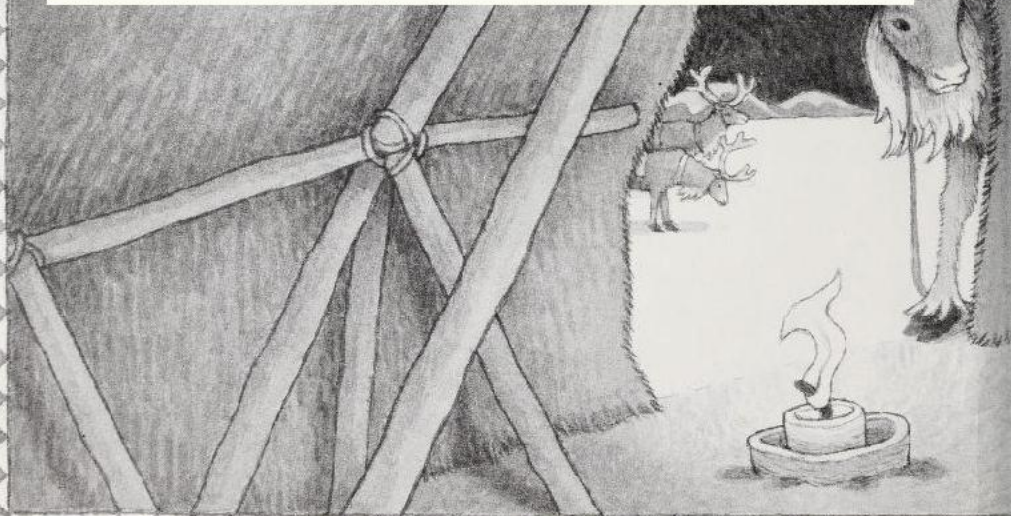
चाँद वाला आदमी अपने स्लेज से कूदकर सीधा तम्बू की ओर दौड़ा.



उसने दुबारा से पूरे तम्बू को छान मारा - खम्बों को, कम्बल के हर बाल को, हर लकड़ी के तख्ते को, ज़मीन के चप्पे-चप्पे को - पर वो छोटी लड़की उसे कहीं नहीं मिली.

इस बीच लैंप अपनी रोशनी चारों ओर बिखेरता रहा.

“मुझे पता है कि वो यहीं कहीं है,” चाँद वाले आदमी ने कहा. “पर अब मुझे आसमान में वापिस लौटना चाहिए. मैं कल रात फिर वापिस आऊँगा.”











चाँद वाला आदमी फिर वापिस अपने स्लेज की ओर गया।  
तभी उसे दुबारा छोटी लड़की के हंसने की आवाज़ सुनाई दी।

“मैं यहाँ हूँ! मैं यहाँ हूँ! वो चिल्लाई।

फिर दुबारा चाँद वाला आदमी तम्बू में वापिस गया। उसने  
दुबारा तम्बू का एक-एक इंच छान मारा पर वो छोटी लड़की उसे  
कहीं नहीं दिखी।

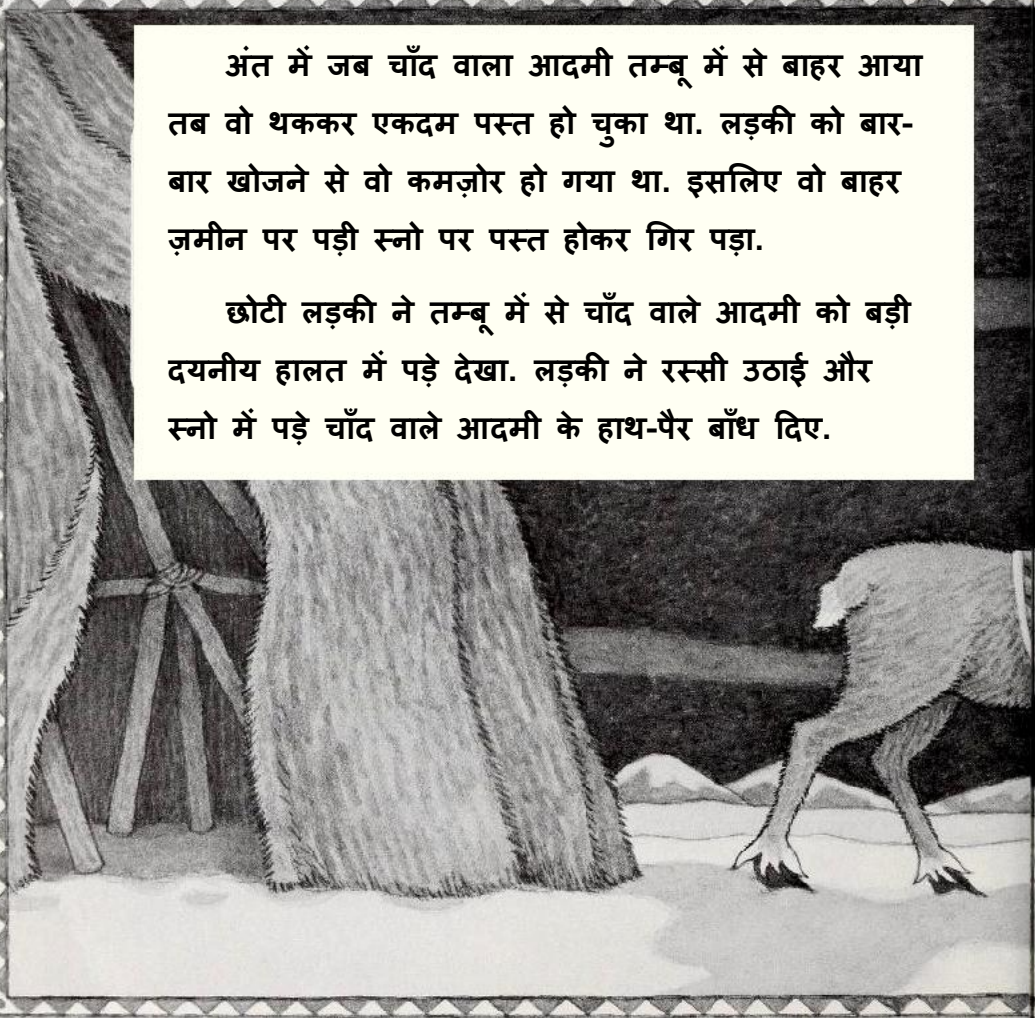
उस बीच लैंप अपनी पूरी तेज़ी के साथ जलता रहा।





अंत में जब चाँद वाला आदमी तम्बू में से बाहर आया तब वो थककर एकदम पस्त हो चुका था. लड़की को बार-बार खोजने से वो कमज़ोर हो गया था. इसलिए वो बाहर ज़मीन पर पड़ी स्नो पर पस्त होकर गिर पड़ा.

छोटी लड़की ने तम्बू में से चाँद वाले आदमी को बड़ी दयनीय हालत में पड़े देखा. लड़की ने रस्सी उठाई और स्नो में पड़े चाँद वाले आदमी के हाथ-पैर बाँध दिए.



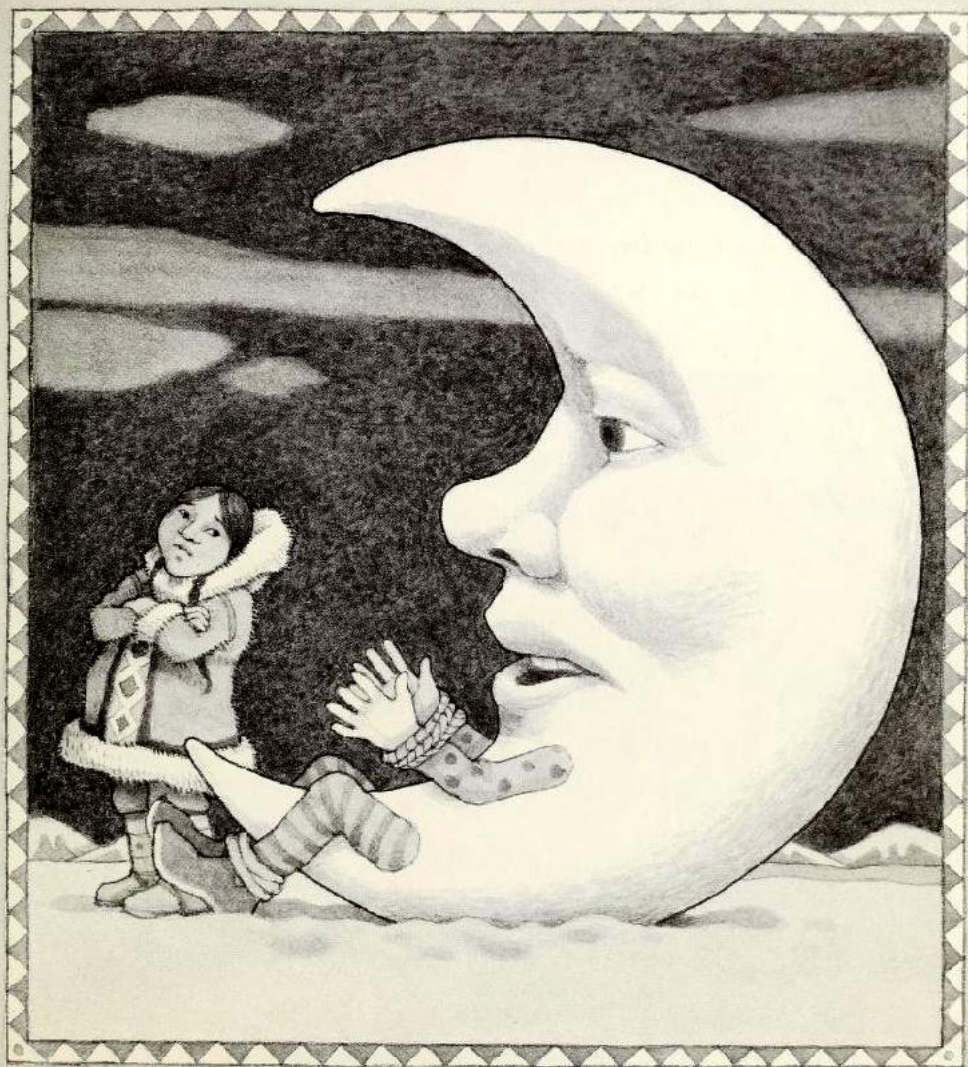


“ऐसा मत करो!” चाँद वाले आदमी ने कहा. “वैसे तुम्हें चुराने के लिए मुझे मौत की सज़ा मिलनी चाहिए. तुम्हारा संगीत इतना मधुर है और मैं आसमान में बिल्कुल अकेला घूमता रहता हूँ. इसलिए अगर तुम मुझे मारना चाहती हो तो उससे पहले मुझे एक बार अपने तम्बू में ले चलो. जिससे मैं खुद को कुछ गर्म कर सकूँ. इस समय मैं बर्फ़ जैसा ठंडा हूँ.”

“तुम और ठंडे? तुम यह क्या भद्दा मजाक कर रहे हो?” लड़की ने हँसते हुए कहा. “मुझे तुम पर कोई यकीन नहीं है. तुम ऊपर आसमान में रहते हो – वही तुम्हारा घर है! तुम तम्बू में रहने वाले प्राणी नहीं हो!”

“फिर कृपाकर मुझे छोड़ दो,” चाँद वाले आदमी ने प्रार्थना की. “अगर मैं तुम्हारे साथ यहाँ नहीं रह सकता, तो कम-से-कम मुझे आसमान में मुक्त होकर इधर-उधर घूमने दो.”





लड़की को चाँद वाले आदमी की बात पर विश्वास नहीं हुआ. पर वो लगातार विनती करता रहा.

“तुम मुझे छोड़ दो. फिर तुम्हारे लोग मुझे रूप बदलते हुए आसमान में देख सकेंगे. मुझे छोड़ दो - मैं तुम्हारे लोगों के लिए रात में यात्रा करते समय, पथ-प्रदर्शक का काम करूँगा.”









“मुझे छोड़ दो फिर मैं तुम्हारे लोगों को एक साल का समय मापने में मदद करूंगा.

पहले मैं बूढ़े बारहसिंघे का चाँद बनूँगा,

फिर कड़क सर्दी का चाँद बनूँगा,

फिर नवजात-बारहसिंघों के शिशुओं का चाँद बनूँगा,

फिर पहली पत्तियों का चाँद बनूँगा,

फिर गर्मियों का चाँद बनूँगा,

फिर मैं बारहसिंघों के सीँघ झड़ने का चाँद बनूँगा,

फिर मैं बारहसिंघों के प्रेम का चाँद बनूँगा,

फिर मैं सर्दियों के मौसम का चाँद बनूँगा,

और अंत में छोटे दिनों का चाँद बनूँगा.”



उस छोटी लड़की ने चाँद वाले आदमी की बात को बहुत ध्यान से सुना, पर उसे फिर भी पूरी तरह यकीन नहीं हुआ।

“अगर मैंने तुम्हें छोड़ दिया,” लड़की ने कहा, “फिर तुम दुबारा से ताकतवर बन जाओगे और मुझे आसमान में उठाकर ले जाओगे.”

“नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा!” चाँद वाले आदमी ने कहा. “तुम मुझ से कहीं ज्यादा होशियार हो. मैं अब कभी भी आसमान से नीचे नहीं उतरूंगा. तुम मुझे बस छोड़ दो फिर मैं रात के आसमान में तुम्हारे लिए उजाला करूंगा.”

“चलो, मैं तुम्हारी बात पर यकीन करती हूँ,” अंत में लड़की ने कहा. उसके बाद लड़की ने चाँद वाले आदमी को रिहा कर दिया.

उसके बाद चाँद वाले आदमी ने बिल्कुल वही किया जो उसने कहा था. उसने अपनी चांदनी की रोशनी, स्नो से लदी ज़मीन पर चारों ओर बिखेरी.





**जेअनेट विंटर** ने बच्चों की बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं और उनके लिए चित्र बनाये हैं. उनके पति रॉजर विंटर भी एक पेंटर हैं. उनके दो बेटे हैं – जोनाह और मैक्स और वे डलास, टेक्सास, अमरीका में रहते हैं.

